

A man in a dark uniform and cap is using a long pole to light a street lamp at night. The lamp is glowing brightly, casting a large, warm light. The man is standing on a sidewalk, and his shadow is visible on the ground. The background is dark, suggesting a nighttime setting.

पेपे

सड़क के लैंप जलाने वाला

एलिसा, चित्र : टेड,

हिंदी : विदूषक

पेपे

सड़क के लैंप जलाने वाला





बहुत ज़माने पहले जब बिजली नहीं थी तब लिटिल इटली, अमरीका में सड़क के स्ट्रीट-लैंप हाथ से जलाए जाते थे. पेपे, मलबरी स्ट्रीट पर एक बिल्डिंग के छोटे घर में रहता था. उसके पिता बीमार थे और माँ का देहांत हो चुका था. वैसे पेपे अभी बिल्कुल बच्चा ही था पर उसे अपनी बहनों की परवरिश के लिए बाहर काम करना पड़ता था. उसके साथ सात बहनें रहती थीं - गिउलिया, अदेलिना, निकोलिना, अंजेलिना, अस्सुनता, मरिउकिया और फिलोमिना. उसकी एक अन्य बहन - अल्बीना उसके चाचा के साथ नेपल्स में रहती थी.

चाचा एक पादरी थे, और वो अनाथ बच्चों की देखभाल करते थे.



पेपे ने कोई धंधा ढूँढने की बहुत कोशिश की. "मैं आपके यहाँ झाड़ू लगा सकता हूँ और फर्श पर लकड़ी का बुरादा बिखरा सकता हूँ," उसने गेन्नारो कसाई से कहा.

"भाफ़ करो पेपे, मेरा धंधा काफी मंदी से गुज़र रहा है," गेन्नारो ने उत्तर दिया.







“मैं आपके यहाँ गिलास धो सकता हूँ,” पेपे ने डॉन सलवाटोर - शराब की दुकान के मालिक से कहा.

“कुछ सालों बाद, जब तुम थोड़े बड़े हो जाओ,” डॉन सलवाटोर ने जवाब दिया.





“मैं काजू-किशमिश और सूखी मेवा की लड़ियाँ बना सकता हूँ,”
उसने कोम्मारे आंतोईटा से कहा. वो मेवे की मिठाई बनाती थीं.
“माफ़ करना पेपे,” उन्होंने उत्तर दिया.
फिर पेपे मोटी मैरी के पास गया. वो सिगार बनाती थीं.
“मैं सिगार गिनकर उन्हें डिब्बों में पैक कर सकता हूँ,” उसने कहा.
पर मोटी मैरी को भी किसी मददगार की ज़रूरत नहीं थी.





फिर एक दिन पेपे को डोमेनिको - सड़क के लैंप जलाने वाला मिला.
"मुझे डॉन सलवाटोर ने बताया है कि तुम्हें नौकरी की तलाश है," लैंप जलाने वाले ने पूछा. "देखो, मैं अपनी पत्नी को वापिस लाने इटली जा रहा हूँ. मेरी गैर-मौजूदगी में तुम लैंप जलाने का काम करना. उससे मेरी नौकरी भी बची रहेगी."
"बहुत अच्छा डोमेनिको, तुम्हारा बहुत शुक्रिया," पेपे ने कहा.
फिर यह खुशखबरी बताने के लिए वो घर की ओर तेज़ी से दौड़ा.



“पापा! निकोलिना! मरिउकिया! देखो मुझे एक नौकरी मिली है,”
वो चिल्लाया. “कल से मैं सड़क के लैंप जलाया करूंगा.”

निकोलिना ने उसे गले लगाया. मरिउकिया ने पेपे के दोनों गालों पर
पुच्छी दी. अस्सुनता, ऊपर-नीचे कूदी और उसने दोनों हाथों से तालियाँ बजाईं.
पर पापा एकदम चुपचाप बैठे रहे. उनका चेहरा पत्थर जैसा शांत बना रहा.

“क्या मैं अमरीका इसलिए आया कि मेरा बेटा सड़क के लैंप जलाने का
नीच काम करे?” उन्होंने कहा. फिर वो बाहर निकले और उन्होंने अपने पीछे
दरवाज़े को जोर से धक्का देकर बंद किया.

पेपे का मुंह लटक गया.

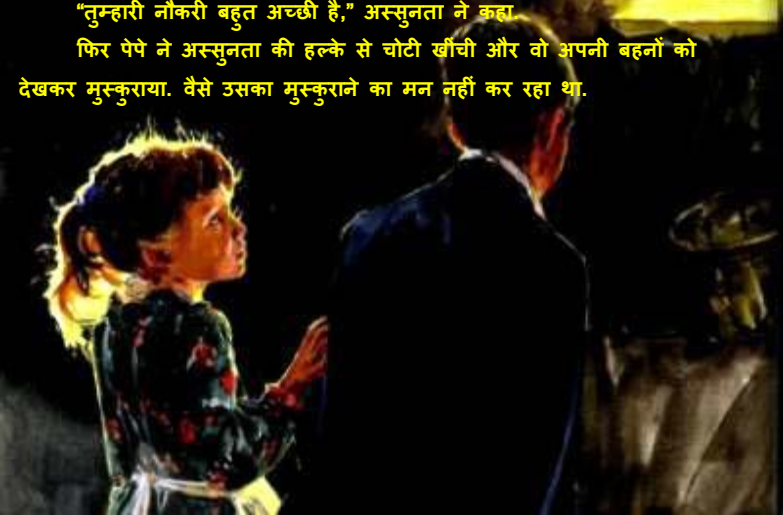
“उनकी बात का बुरा मत मानना,” फिलोमिना ने कहा.

“वो बीमार हैं. वो क्या कहते हैं उन्हें कुछ नहीं पता,” अंजेलिना ने कहा.

“पापा तुम्हें बेहद प्यार करते हैं,” अदेलिना ने कहा.

“तुम्हारी नौकरी बहुत अच्छी है,” अस्सुनता ने कहा.

फिर पेपे ने अस्सुनता की हल्के से चोटी खींची और वो अपनी बहनो को
देखकर मुस्कराया. वैसे उसका मुस्कराने का मन नहीं कर रहा था.



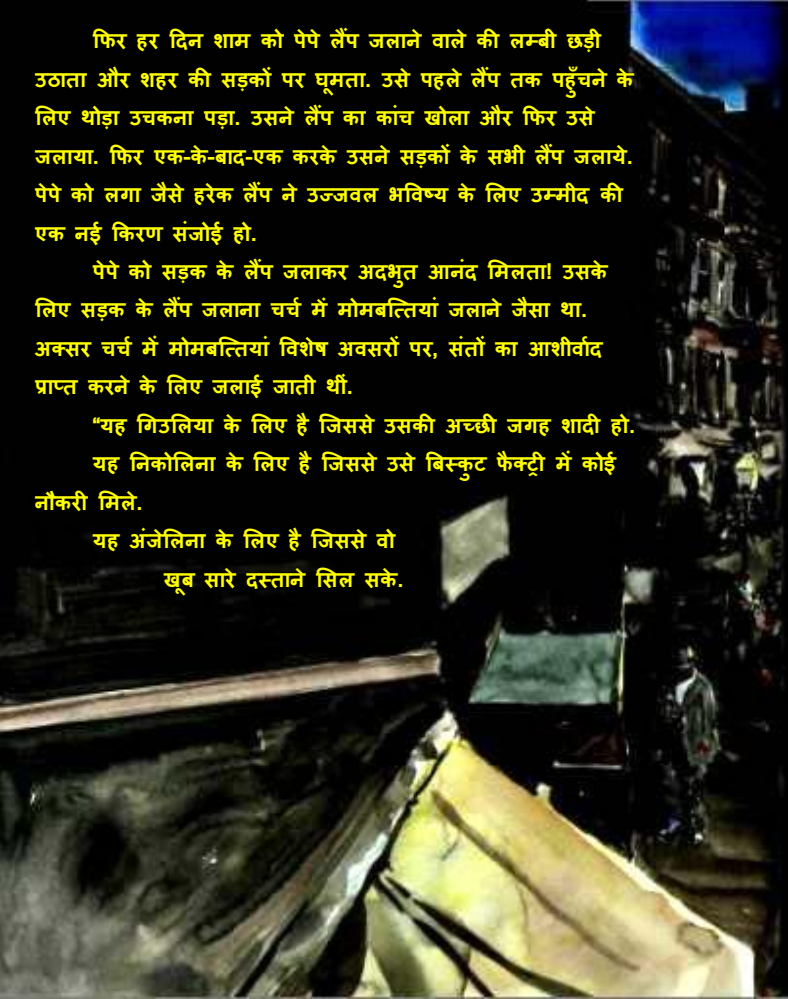


फिर हर दिन शाम को पेपे लैंप जलाने वाले की लम्बी छड़ी उठाता और शहर की सड़कों पर घूमता. उसे पहले लैंप तक पहुँचने के लिए थोड़ा उचकना पड़ा. उसने लैंप का कांच खोला और फिर उसे जलाया. फिर एक-के-बाद-एक करके उसने सड़कों के सभी लैंप जलाये. पेपे को लगा जैसे हरेक लैंप ने उज्जवल भविष्य के लिए उम्मीद की एक नई किरण संजोई हो.

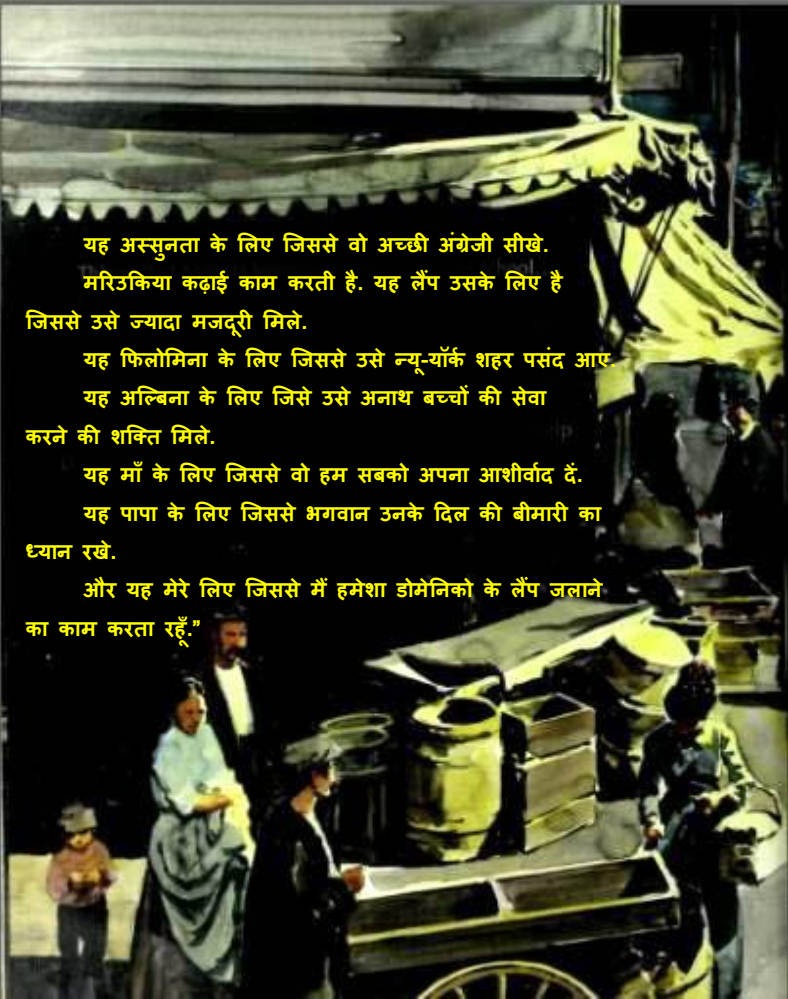
पेपे को सड़क के लैंप जलाकर अदभुत आनंद मिलता! उसके लिए सड़क के लैंप जलाना चर्च में मोमबत्तियां जलाने जैसा था. अक्सर चर्च में मोमबत्तियां विशेष अवसरों पर, संतों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जलाई जाती थीं.

“यह गिउलिया के लिए है जिससे उसकी अच्छी जगह शादी हो.
यह निकोलिना के लिए है जिससे उसे बिस्कुट फैक्ट्री में कोई नौकरी मिले.

यह अंजेलिना के लिए है जिससे वो
खूब सारे दस्ताने सिल सके.







यह अस्सुनता के लिए जिससे वो अच्छी अंग्रेजी सीखे.
मरिउकिया कढ़ाई काम करती है. यह लैंप उसके लिए है
जिससे उसे ज्यादा मजदूरी मिले.

यह फिलोमिना के लिए जिससे उसे न्यू-यॉर्क शहर पसंद आए
यह अल्बिना के लिए जिसे उसे अनाथ बच्चों की सेवा
करने की शक्ति मिले.

यह माँ के लिए जिससे वो हम सबको अपना आशीर्वाद दें.
यह पापा के लिए जिससे भगवान उनके दिल की बीमारी का
ध्यान रखे.

और यह मेरे लिए जिससे मैं हमेशा डोमेनिको के लैंप जलाने
का काम करता रहूँ."





एक दिन जब पेपे घर पहुंचा तो पापा उसे खिड़की में से देख रहे थे.

"तुम हमेशा के लिए सड़क के ही होकर रह जाओगे!" वो चिल्लाये.

उसके बाद पेपे बहुत देर तक सिर झुकाए बैठा रहा. वो रोने लगा पर जल्दी से सो गया जिससे कि कोई उसे रोते हुए नहीं देखे. सुबह उसके कंधे कुछ लटके थे.

"क्यों पेपे, इतने दुखी क्यों हो," मोटी मैरी ने उसे चिढ़ाते हुए कहा. उसके बाद पेपे का मूड कुछ अच्छा हुआ.

पापा का गुस्सा बना रहा. "तुम ज़िन्दगी में कुछ नहीं बनोगे," वो बड़बड़ाए.

गिउलिया के पेपे का हाथ, अपने हाथों में लिया. "तुम ज्यादा फ़िक्र मत करो," उसने पेपे से कहा.

"पेपे, चलते समय सिर ऊपर उठाकर चलो," निकोलिना ने काम पर जाने से पहले उसे सलाह दी.





पेपे ने निकोलिना की बात पर अमल करने की कोशिश की.

जब पेपे शाम को घर वापिस आया तो पापा ने अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया. "मैं तुम्हारी तरफ देखना भी नहीं चाहता, तुमने मेरी इज्जत को मिट्टी में मिला दिया है," उन्होंने कहा.

"तुम मेरे साथ अब बिल्कुल नहीं खेलते हो, पेपे," अस्सुनता ने शिकायत के लहजे में कहा. पेपे ने बस अपनी आँखें नीचे कीं और कोई उत्तर नहीं दिया. फिर वो सड़क के लैंप जलाने को दौड़ा. जल्दी में उसे और कुछ याद ही नहीं रहा.

"यह बड़ी ज़लालत की नौकरी है," उसने सोचा. फिर उसे लगा कि पड़ोस के लोग, पीठ पीछे उस पर ज़रूर हँसते होंगे.

उसने मन बनाया कि अब वो किसी भी पड़ोसी को अपना मुंह नहीं दिखाएगा. फिर उस रात लिटिल इटली की सड़कों पर अँधेरा छाया रहा.

"कहाँ है सड़क के लैंप जलाने वाला, पेपे?" लोगों ने एक-दूसरे से पूछा.

पेपे, घर के किचन में बैठा रहा अपने सिर को दोनों हाथों में थामे. उस रात अस्सुनता घर वापिस नहीं आई.





गिठलिया लगातार आस लगाए खिड़की के बाहर देखती रही. अदेलिना, नूडल्स आंच पर रखकर भूल गई. पापा, आगे-पीछे चहलकदमी करते रहे. उन्होंने रात को बहुत कम खाया, और बिना चुस्की लिए ही कॉफी को ठंडा होने दिया.

“चाहें वो कितनी बड़ी जो जाए, पर अस्सुनता हमेशा एक छोटी बच्ची ही रहेगी,” वो लगातार बड़बड़ाते रहे.

अंत में पिताजी ने अपना मुंह खोला. “पेपे,” उन्होंने विनती की, “अपनी हठ छोड़ो और जाकर सड़क के लैम्प्स जलाओ.”

उनके शब्द सुनकर पहले तो पेपे को यकीन ही नहीं हुआ. “मैं भला कैसे सड़क के लैम्प्स जला सकता हूँ? मैं सड़क के भिखमंगे जैसे बड़ा होना नहीं चाहता हूँ. पापा, आप हमें अमरीका इसलिए लाए थे जिससे हम कुछ लायक बनें - कुछ बड़ा काम करें! मैं अब से पढ़ूंगा और एक दिन डॉक्टर बनूँगा.”

“देखो, सड़कों पर एकदम अँधेरा है, पेपे,” पिताजी ने कहा. “अँधेरे में अस्सुनता को डर लग रहा होगा. “आज रात लैंप जलाना बेहद ज़रूरी हैं. पेपे, कृपा जाकर लैंप जलाओ. उससे मुझे, तुम पर गर्व महसूस होगा.”





पेपे में पिताजी की बात को मना करने की हिम्मत नहीं थी. फिर उसने कोट पहना और बाकी सामान अपने साथ लिया. उसके बाद उसने सड़क पर जाकर पहला लैंप जलाया. एक-के-बाद-एक करके उसने बाकी सारे लैम्प्स भी जलाए. हर बार उसने एक ही प्रार्थना बुदबुदाई, "आज रात अस्सुनता सुरक्षित रहे."





जब पेपे आखिरी लैंप जला रहा था तो उसे अस्सुनता दिखी. वो बिचारी, डर के मारे लैम्पपोस्ट से चिपकी खड़ी थी. अँधेरे के मारे उसमें आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं थी. "तुमने आज रात हम लोगों के लिए लैम्प्स क्यों नहीं जलाए, पेपे?" उसने पुछा.

"मुझसे गलती हो गई, अस्सुनता," पेपे ने उत्तर दिया.







“पेपे, जब मैं बड़ी होऊंगी तो मैं तुम्हारे जैसे ही बनूंगी. तब मैं भी सड़क के लैम्प्स जलाने का काम करूंगी. मुझे लगता है कि पूरे अमरीका में यही सबसे उम्दा काम है.”

“सबसे उम्दा काम?” पेपे ने चकित होते हुए पूछा.

“तुम अँधेरे को दूर भागने का काम करते हो,” अस्सुनता ने कहा. पेपे उसकी तरफ देखकर मुस्कराया. फिर उसने अपनी बहन को गोद में उठाया.

अंत में पेपे ने आखिरी लैम्पपोस्ट की तरफ देखा. “आज तुम इस आखिरी लैंप को जला सकती हो, अस्सुनता.” पेपे ने लम्बी छड़ी पकड़ने में अस्सुनता की मदद की.

लौटते वक्त अस्सुनता, पेपे के कंधे पर ही सो गई. अब जब पेपे वापिस घर जा रहा था तो उसका सिर ऊंचा था और उसकी आँखों में दुबारा एक चमक थी.

पेपे बिल्डिंग में घुसा और उसने घर पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ीं।
अस्सुनता अभी भी गहरी नींद में सोई थी। घर में घुसते ही छह बहनें उन
दोनों को गले लगाने को दौड़ीं। फिर उन्हें पिताजी के लिए भी जगह बनानी
पड़ी। पिताजी ने बहुत समय बाद पेपे के कंधे पर अपना हाथ रखा।
“तुम्हारा काम बहुत अच्छा है, पेपे,” उन्होंने कहा। “लैंप जलाते रहो, पेपे।
मुझे तुम पर नाज़ है।”





उसके बाद पेपे लम्बे अरसे तक सड़क के लैम्प्स जलाता रहा. वो मानता था कि हरेक लैंप की लौ आने वाले कल के लिए एक आशा की उम्मीद थी.

